Collage Roll No- 1169

INDEX

NAME : SANDEEP KUMAR STD. : .... SEC. B.ed Ist ROLL NO. 17204040069

S.NO.	Date	Title	Page No.	Teacher's Sign./ Remarks
1.		पठन भाषाई कौशल के रूप में	1	
		पठन कौशल	9	
2.		वार्तालाप	12	
3.		जीवन आलेख	15	
4.		समाचार वाचन	18	
5.		सक्रिय बन्द वाचन	21	
		और पाठ पर विचार करना	23	
6.		लेखन कौशल	25	
7.		अधिगम प्रक्रिया की त्रुटियो	26	
		को पहचानना	28	
8.		रचना लेख	30	
9.		ग्लोबल नीड्स एण्ड इंडियन एजुकेशन	[illegible]	

University Roll No. ..... Page No. : ....1.....

पठन भाषाई कौशल के रूप में पठन कौशल का अधिग्रहण (Unit-5)

कार्य को करने की विशेष योग्यता कौशल कहलाती है। किसी विशेष कार्य में निपुण होने की योग्यता कौशल कहलाती है। भाषा की योग्यता का विकास कौशल के विकास से संबंधित है। भाषाई संप्रेषण दो प्रकार का होता है।

1. मौखिक 2. लिखित

डॉ. शिरवा चतुर्वेदी का मानना है कि भाषा में निपुणता दोनों पर निर्भर है।

न. वी. रामगोपाल ने भाषा शिक्षण को स्पष्ट करते हुए कहा कि - अन्य भाषा शिक्षण में यह आवश्यक है कि पहले भाषा के मुख्य कौशल सिखाएं और बाद में गौण कौशल को सिखाया जाए। पठन प्रक्रिया के चार सोपान होते हैं

1. पहचान :-
- लिपि को पहचानना।
- लिपि को संकेतों व सांकेतिक ध्वनियों से जोड़ना।
- ध्वनि संकेतों से गठित शब्द या वाक्य को पहचानना।

2. अर्थ ग्रहण :-
- लिपि संकेतों द्वारा निर्मित शब्दों, वाक्यों में निहित अर्थ को पहचानना
- अर्थ को संदर्भानुसार समझना।

3. मूल्यांकन :-
- यह उच्चस्तरीय सोपान है।
- पाठक गृहण किए गए विचारों की उपयोगिता, सार्थकता विश्वसनीता पर विचार का मूल्यांकन करता है।

4. अनुप्रयोग :-
अन्तिम सोपान है
= पाठक ग्रहण किए नि पठन कौशल को उद्देश्य पूर्ण होता है।

वैश्विक व स्थानीय समझ हेतु पढ़ना।
वर्तमान समय मे विश्व तेजी से भूमण्डलीकरण की ओर बढ़ रहा है। अतः बालक का भाषाई ज्ञान प्राप्त महत्वपूर्ण या स्थानीय भाषा तक ही सीमित नहीं रह सकता,
(1) स्थान विशेष पर बातचीत या चर्चा हेतु।
(2) प्राथमिक शिक्षा हेतु।
3. स्थानीय मनोरंजन प्राप्त करने के लिए।
4. संस्कृति के ज्ञान हेतु
5. दुनियादारी की समझ का विकास।

ग्लोबल भाषा का ज्ञान :-
भाषा की सीमा होती है अर्थात एक भाषा एक निश्चित दायरे में बोली जाती है जो भाषा एक से अधिक देशो या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बोली जाए। प्राय: ग्लोबल भाषा का रूप ले लेती है। इसी कारण अंग्रेजी ने आज वैश्विक भाषा का स्थान ले लिया।

वैश्विक भाषा की आवश्यकता :-
(1) अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो का विकास।
(2) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने के लिए।
(3) विदेश भ्रमण के लिए।
(4) विभिन्न देशो के साहित्य वाचन हेतु।
(5) विभिन्न देशो की जानकारी प्राप्त करने के लिए

वैश्विक भाषा और स्थानीय भाषा की समझ हेतु :-

भारत एक बहुभाषीय देश है। यहां सरकार के त्रिभाषा सूत्र की स्थापना की ताकि बालक सभी स्तर पर ज्ञान पा सके।

स्थानीय भाषा के रूप में भारत में अनेक भाषाओं का प्रचलन है। अतः अपनी मूलभाषा या स्थानीय भाषा का ज्ञान आवश्यक है। सभी देशों की अलग-अलग भाषा है। सम्पर्क भाषा के रूप में एक भाषा की आवश्यकता ने अंग्रेजी को चुना। प्रायः शक्तिशाली भाषा वैश्विक भाषा का रूप ले लेती है। अंग्रेजों द्वारा अनेक देशों पर शासन किए जाने के कारण आज अंग्रेजी द्वारा अनेक देशों पर शासन किए जाने के कारण अंग्रेजी वैश्विक भाषा बनी है।

Reading a wide variety of text such as descriptive, narratives, conversations, biographical, sketches, plays, poems, letters, screenplays, news reports

शिक्षक समाज में प्रभावी शिक्षण हेतु विद्यालय में विद्यार्थियों को तैयार करते हैं। परन्तु दुर्भाग्य से कई विद्यार्थियों के पास पढ़ने की कुशलता नहीं होती। पठन अधिग्रहण के विषय पर चर्चा करने के पश्चात बालक में विविध प्रकार की अभिरुचि का विकास किया जाना चाहिए।

वर्णात्मक अध्ययन :-

वर्णात्मक पठन से अभिप्राय घटना, वस्तु, दृश्य या अन्य विवरण की व्याख्या या विस्तार से वर्णन करने को वर्णात्मक अध्ययन है।

वर्णात्मक विवरणों पढ़ते समय बालक के निम्न कौशलों का विकास करना आवश्यक है।
1. पाठ को पढ़ते समय मानसिक बिम्ब बना सके।
2. पाठक को देखने, समझने और महसूस करने हेतु तैयार करना
3. पसंदीदा स्थान का चयन।

कथा (Narrations)

कथा या कथन को पढ़ने की एक विशेष पद्धति होती है जिसका प्रयोग दर्शकों के समक्ष कथा को कहने के लिए प्रयोग किया जाता है। कथा विधा का प्रयोग बोले या पढ़े जाने के लिए एक कमेन्ट्री के रूप में व्यक्त किया जाता है।

1. दृश्य कथा बिन्दु परिप्रेक्ष्य :- दृश्य कथा को पढ़ने के लिए व्यक्तिगत या गैरव्यक्तिगत प्रकार है जिसमें कहानी या कथा के रूप में प्रस्तुति की जाती है।
2. कथा आवाज :- यह प्रस्तुतिकरण करने का ध्वनिमय माध्यम है जिसमें कथावाचक कथा का प्रस्तुतिकरण करता है।
3. कथा समय :- कथा समय के अन्तर्गत कहानी का समय वर्तमान या भविष्य या अतीत के रूप में कहा जाता है।

वार्तालाप (conversation)

बातचीत या चर्चा या वार्तालाप दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य की जाने वाली चर्चा कहते हैं। वार्तालाप दो लोगों के मध्य सञ्चार का सहज रूप है।

वार्तालाप विश्लेषण व समाजशास्त्र की वह शाखा है जो मानव बातचीत और संरचना के संगठन के संबंध पर ध्यान देने की योग्यता है।

1. सकारात्मक सम्प्रेषण की योग्यता का विकास।
2. नकारात्मक शब्दों या कमजोर शब्दों का प्रयोग न करना।
3. कार्य करने के लिए किसी से जबरदस्ती न करें।
4. कार्य न किए जाने की अवस्था में कारण बताएँ और विकल्प के विषय में चर्चा करें।
5. अन्य व्यक्ति का आदर करें व आवश्यक शब्दों का प्रयोग करें।

जीवनी आलेख (Biographical Sketches)

जीवनी आलेख किसी व्यक्ति के विषय में व्यक्तिगत रूप से उसकी उपलब्धियों, जीवन, चरित्र आदि के विषय वर्णन करने की प्रक्रिया ही विधा है। यह एक संक्षिप्त और वास्तविक विधा है। जीवनी आलेख व्यक्ति विशेष के विषय में वास्तविक रूप से वर्णित जानकारी और सूचनाएँ हैं। जीवनी आलेख पढ़ते समय :-

1. व्यक्ति के विषय से सम्बन्धित सभी सूचनाओं को ध्यान से पढ़ें।
2. जीवन की महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान केन्द्रण
3. लेखक द्वारा वर्णित महत्वपूर्ण बिन्दुओं की भाषा शैली पर ध्यान देना।

नाटक (Plays)

नाटक काव्य का ही रूप है। नाट्य रचना में श्रवण और मौखिक दोनों कौशलों का प्रयोग किया जाता है।

नाटक में श्रव्य व दृश्य विधान रसानुभूति प्रस्तुत करता है।

1. श्रव्य 2. दृश्य

भरत मुनि का नाट्यशास्त्र रस विषय पर प्राचीन ग्रंथ है। नाटक पढ़ते समय हम मात्र पाठक नहीं रहते वरन् अभिनेता हो जाते हैं। अभिनेता होकर ही नाटक को पढ़ना ही नाटक के वाचन की की उचित विधि है। नाटक पढ़ते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. नाटक एक ही मूड में नहीं होना चाहिए।
2. नाटक पढ़ने की गति में भी उतार-चढ़ाव आना चाहिए।
3. नाटक के संवाद बोलने चाहिए न कि पढ़ने
4. नाटक का पढ़ा जाना नाटक खेले जाने का ही हिस्सा है।
5. नाटक पढ़ने वाला आवश्यक नहीं कि एक्टर ही हो।
6. नाटक को बार-2 पढ़ना चाहिए तभी नाटक में रस आता है।

कविता (Poem)

कविता पद्य शिक्षण का महत्वपूर्ण स्त्रोत रही है "वाक्यम् रसात्मक काव्यम्।" अर्थात रस प्रदान करने वाले वाक्य ही काव्य है। इसी कारण मानव काव्य से हमेशा विमुग्ध होता रहा है। काव्य पाठ करते समय बालक को निम्न प्रकार से प्रशिक्षित करना चाहिए —

1. लय तत्व और भाव के अनुसार कविता पढ़ना।
2. कविता में रूचि उत्पन्न करना।
3. कवि के भावों एवं विचारों के साथ सम्बन्ध स्थापित कर आनन्द के साथ पढ़ना।
4. गीत को गाकर गजल पढ़ने का तरीका अलग होता है।

कविता पाठ सस्वर किया जाना चाहिए।

पत्र (Letter)

पत्र चिट्ठी या खत किसी कागज पर लिखे सन्देशो को कहते है। 19 वी शताब्दी मे पत्र लेखन दो व्यक्तियो के मध्य सचांर का सबसे विश्वसनीय माध्यम था। मुख्यत पत्र दो प्रकार के होते है:-

1. औपचारिक पत्र
2. अनौपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र उद्देश्यपूर्ण होते है जैसे-प्रार्थना पत्र, रोजगार हेतु आवेदन, व्यापारिक पत्र आदि। इनके लिखने का निश्चित तरीका होता है। पत्र पढ़ते समय पाठक के चेहरे पर आने वाले उतार चढ़ाव आदि को देखकर जाना जा सकता है कि पत्र मे लिखा गया संदेश कैसा है। पत्र पढ़ते समय निम्न बाते ध्यान मे रखनी चाहिए

1. पत्र किसने लिखा है।
2. औपचारिक पत्रो में पत्र का उद्देश्य ऊपर विषय के रूप में लिखा होता है।
3. पत्र पढते समय व्यक्ति पत्र को भावो के अनुसार व्यक्त करता है।
4. पत्र की भाषा मे शिष्टता होती है।

पटकथा (screenplay)

पटकथा लेखन एक कला है वास्तव में यह वाचि

वास्तविक साहित्य है। पटकथा सिनेमा, रेडियो, टीवी आदि सुनने के लिए लिखी जाती है। पटकथा में बिम्ब बोलते हैं हम नहीं, परन्तु दर्शक उस विशेष पटकथा में प्रवेश कर जाता है। कोई भी पाठक पटकथा के भावों से अछूता नहीं रह सकता। पटकथा के तीन अंग होते हैं।

(1) कहानी
(2) दृश्यमय बनावट
(3) संवाद

पटकथा पढ़ते समय इन तीनो अंगो में तालमेल होना आवश्यक है। वास्तव में पटकथा पात्रो और संवादो के माध्यम से पढ़ी जाती है।

रिपोर्ट (Reports)

रिपोर्ट एक लिखित दस्तावेज है जो विशिष्ट दर्शकों के लिए केन्द्रीकृत और मुख्य सामग्री प्रस्तुत करता है। रिपोर्ट का प्रयोग प्राय, जांच या पूछताछ के परिणाम प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। रिपोर्ट पढ़ते समय निम्न बातो का ध्यान रखना चाहिए -

1. रिपोर्ट वास्तविक तथ्यो पर आधारित होती है
2. रिपोर्ट पढ़ते समय वाणी और तथ्य प्रस्तुत करने चाहिए।
3. प्रत्येक उद्देश्य के लिए रिपोर्ट अलग प्रकार से लिखी गई जाती है।
4. रिपोर्ट की भाषा निश्चित होती है।

समाचार वाचन (News Report)

समाचार रिपोर्ट देश, राज्य व विशेष घटना से संबंधित जानकारी के लिए प्रयोग की जाती है। समाचार के प्रकार के होते है जैसे टीवी समाचार, रेडियो समाचार, समाचार पत्र आदि। समाचार पढ़ते समय निम्न बातो का ध्यान रखना चाहिए।

1. टीवी समाचार पढ़ते समय समाचार वाचक की आवाज स्पष्ट होनी चाहिए।
2. समाचार पढ़ते समय समाचार वाचक की दृष्टि सामने दर्शको की ओर होनी चाहिए।
3. समाचार पढ़ते समय आवाज के साथ आत्मविश्वास भी होना आवश्यक है।
4. समाचार प्रस्तुतिकरण से पूर्व अभ्यास कर लेना चाहिए।
5. त्रुटिहीन समाचार वाचन किया जाना चाहिए।
6. समाचार पत्र व्यक्तिगत रूप से पढ़े जाते हैं।
7. अपनी रुचि के अनुसार समाचार पढ़ने चाहिए।

सक्रिय/बंद वाचन और पाठ पर विचार करना (Active /close Reading and Reflecting on Texts)

पाठ को पहचानना और चयन करना : पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम से परे :

सक्रिय वाचन लिखने से अधिक पाठ पढ़ने से सम्बन्धित है। गंभीर लेखन के बारे में जानने के लिए या समझने के लिए अलग तरकी है। आपने ग्या

पढ़ा है।

पूर्व पठन (Pre-Reading) - पूर्व पठन का प्रयोग पाठ को पढ़ने से पूर्व किया जाता है। इसे पाठ सारांश, सार या कक्षा नोट्स समीक्षा के रूप में देखा जा सकता है। पाठ online के लिए निम्न बाहरी स्रोतों का निर्माण करना है उन्हें पहले ही निर्धारित कर लें।

आलोचनात्मक पठन की प्रक्रिया को समझाना (Understanding the process of critical reading)

आलोचनात्मक पठन या गंभीर पढ़ना भाषा विश्लेषण का रूप है। वास्तव में गंभीर पठन से हमने क्या पढ़ने की आलोचना करना नहीं है। आलोचनात्मक चिन्तन स्वयं से ही प्रश्न करने हेतु तत्पर करता है कि लेखक क्या कहना चाह रहा है।

किसी व्यक्ति द्वारा किस प्रकार पढ़ा गया की ओर इंगित करता है। आलोचनात्मक चिन्तन अपनी सोच और अधिगम को विकसित करने की तकनीक है।

पूर्व पठन व उत्तर पठन की प्रक्रिया (ways of reading: pre-reading & post reading)

पूर्व पठन अर्थात पाठ पढ़ने से पहले तत्पर होने की अवस्था है। भाषा विकास के चरणों में पठन का विकास कई वर्षों का अनुभव होता है।

जो अवधारणात्मक विकास और सामाजिक विकास के साथ विकसित होता है। जिसका प्रारंभ बालक के प्रथम जन्मदिन के कुछ शब्दो को बोले जाने के साथ प्रारम्भ हो जाता है। पूर्व पठन की प्रक्रिया को निम्न प्रकार से जाना जा सकता है-

मस्तिष्क उद्वेलन -
- पढ़ी जाने वाली सामग्री के शीर्षक की जाँच करना।
- पढ़ी जाने वाले सामग्री को समझने और दोहराने के सामग्री के अंशों का चयन।

समूह चर्चा :-
समूह चर्चा के द्वारा क्या पढ़ा जाता है और इस विषय से संबंधित विचारो की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

मानसिक चित्रण - यह सभी मस्तिष्क उद्वेलन का ही एक तरीका है जो शीर्षक या लेख के विषय में मानसिक प्रतिबिं बनाने में सहायक होता है।

पूर्व प्रश्न :- पढ़ने से पूर्व शीर्षक या चयनित सामग्री से संबंधित प्रश्नो का निर्माण कर लेना चाहिए।

1. परिभाषा
2. विशेषताएँ
3. उदाहरण
4. अनुभव
5. अवलोकन
6. पाठ का गठन
7. पढ़ने का उद्देश्य
8. लेखक के विचार

बाहर निकलने में सहायता है
परचात पठन हेतु पढ़ते समय तैयार पर्चीसे ज्ञात होता है कि अभी तक क्या सीखा। क्योंकि जब छात्र पढ़ता है तो उसे पाठ से बाहर आने में समय लगता है।
1. की चिन्ह का निर्माण जिनके द्वारा छात्र बाहर निकलना चाहते है।
2. पाठ के तुरन्त बाद विद्यार्थियो को Exit slip प्रदान करे
3. अपने विद्यार्थियो की आवश्यकतानुसार Exit slip तैयार करे।
4. विद्यार्थियो की प्रतिक्रिया आने के पश्चात Exit slip एकत्र करे।
5. Exit slip के माध्यम से जाने की विद्यार्थी अपनी आवश्यकताए का वितरण किस प्रकार प्रस्तुत करते है।

लेखन कौशल को विकसित (UNIT-2) (Developing writing skills)

लेखन कौशल का विकास करने की प्रक्रिया में लेख किस प्रकार के पाठकों के लिए लिखा जा रहा है का ध्यान रखना चाहिए। लिखे जाने वाले दर्शक किस श्रेणी के है या लेख किस प्रकार का लिखा जाना है दोनो महत्वपूर्ण बाते है। लेखन कौशल मे तीन बातो का समावेश होता है

1. वर्ण 2. वर्तनी 3. रचना

उद्देश्य पूर्ण लेखन से तात्पर्य है लेखन से संबंधित विशिष्ट तकनीको का विकास करना जिससे विद्यार्थी का कक्षा-लेखन से संबंधित विकास तो होगा ही और उसका लेखन मे सम्मान भी विकसित होगा। इसे ध्यान रखते हुए निम्न बिंदुओ का ध्यान रखा जाना चाहिए -

1. लेख का विषय
2. लेखन विषय का उद्देश्य
3. लेख किस स्तर के लिए लिखा जाना है।
4. लेखन विषय से संबंधित शैली की जानकारी।
5. शब्दावली की जानकारी।
6. लेखन के विषय से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी।
7. लेखन विषय से संबंधित स्त्रोत।

विशिष्ट दर्शको हेतु लेखन :

लेखन प्राय एक वर्ग को ध्यान में रखकर ही किया जाता है। उदा० केलिए माता-पिता से बात अलग ढंग से की जाती है तो मित्रो से अलग प्रकार से की जाती है। ठीक इसी प्रकार लेखन भी दर्शको को ध्यान में रखकर किया जाता है।

अपने दर्शको के विषय में जानकारी प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। लेख लिखते समय जिनके लिए लेख लिख रहे हैं उनसे संबंधित जानकारी एकत्र करना। लिखने की योजना बनाते समय यह ज्ञान लेना चाहिए कि हम किसके लिए लिख रहे हैं अर्थात दर्शन किस प्रकार के हैं, वे क्या चाहते हैं। सामान्य दर्शको हेतु निम्न बाते महत्वपूर्ण है :-

1. पाठको का सामान्यीकृत समूह - पाठको के सामान्य समूह से अभिप्राय उस वर्ग से है जो आपके समान ज्ञान रखता है या उससे कम। ऐसे वर्ग के लिए उदा० भूमिका, व्याख्यान आदि का प्रस्तुतिकरण किया जाना चाहिए।

2. अपने क्षेत्र में व्यवसायिक समूह :- अपने क्षेत्र में व्यवसायिक समूह के लिए लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह उसी क्षेत्र विशेष से संबंध रखते हैं जिसके लिए आप लिख रहे हैं। अत: भाषा व तकनीकी शब्दो का प्रयोग किया जा सकता है।

3. शैक्षिक समुदाय :- जब आप शैक्षिक समाज में रहते हैं या अनुसंधान पत्र लिखते हैं तो यह ध्यान रखना चाहिए कि वे आपसे विशेषज्ञता की आशा रखते हैं। अत: उनकी मानसिक खुराक के आधार पर तथ्य को प्रस्तुत करना चाहिए।

कक्षा लेखन का अनुभव - सहयोग व संपादन सहित
(Exprince theclassroom process of writing - including collaboration editing)

कक्षा मे विद्यार्थी सीखते हैं और शिक्षक सिखने मे उनकी सहायता करते हैं छात्र और शिक्षक के मध्य इस क्रिया को शिक्षण कहते हैं। लेखन कला इसका महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस प्रक्रिया मे बालक नए विचारो को बुनने, सुधारने और अन्य साथियो के समक्ष कहानी और कविता लेखन के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। शिक्षक बच्चो को कक्षाकक्ष में कहानी, कविताए, घटना वर्णन, पत्र, अखबार के समाचार रिपोर्ट, चुटकुले आदि के माध्यम से लेखन की अलग-2 शैलियो से परिचित कराते हैं। साथ ही यह बच्चो को अलग-2 रूपो मे लिखने को प्रेरित करते हैं।

सहयोगात्मक लेखन (Collaborate Writing)

सहयोगात्मक लेखन से अभिप्राय है लेखन कार्य एक योजना पर एक से अधिक व्यक्तियो द्वारा किआजाए। यह एक प्रकार से नौसिखिए लेखको के लिए एक लेखन का दृष्टिकोण है।

सहयोगात्मक लेखन की रणनीतियाँ :-

एकल लेखक लेखन :-

एकल लेखक लेखन में टीम के सदस्य लिखने के लिए पूरी टीम से दो एक प्रतिनिधि के रूप में चुनते हैं। लेखन कार्य सरल होने पर इस प्रकार का लेखन कराया जाता है।

अनुक्रमिक एकल लेखन :-

इस प्रकार के लेखन में समूह के सदस्य एक समय में एक समूह लेखन के एक भाग को लिखवाता है। और उसे अगले समूह के पास भेजते हैं।

समान्तर लेखन :-

इसमें लेखन को अलग-2 भागों में विभाजित कर अपने-2 भाग का लेखन एक ही समय पर किया जाता है। यह दो प्रकार का होता है।

(क) क्षैतिज विभाजन लेखन

(ख) स्तरीकरण विभाजन समान्तर लेखन

प्रतिक्रियात्मक लेखन :-

किसी उत्पाद हेतु अपने-2 विचार व दूसरे के विचारों में समन्वय के साथ लिखते हैं।

मिश्रित मोड :-

एक या अधिक प्रकार के लेखन उपायों का प्रयोग करना।

समान्तर निर्माण

समान्तर निर्माण (cut and paste)

अनुक्रमित योगात्मक निर्माण (Puzzle)

एकीकृत निर्माण लेखन

University Roll No. ..... Page No. : 17

प्रतिनिधित्व लेखन :-
अनेक पक्षों द्वारा एक साथ लिखना

लेखन में संशोधन (correction writing)

लेखन में संशोधन से अभिप्राय है लिखे गए लेखन में सुधार करना या त्रुटियां दूर करना। संशोधन की प्रक्रिया में विभिन्न लक्ष्य और मानक निर्धारित किए जाते हैं। जैसे :-

1. निर्धारित शब्द सीमा
2. शैक्षिक लेखन का अपेक्षित स्तर
3. स्पष्ट और तार्किक क्रम
4. वर्तनी, संदर्भित व्याकरण और मानक

अधिगम प्रक्रिया की त्रुटियों को पहचानना

बालक सीखते समय एक ही बार में उचित ज्ञान प्राप्त कर ले ऐसा सम्भव नहीं होता। शिक्षक और छात्र के मध्य चलने वाली शिक्षण प्रक्रिया के अलावा भी बच्चे जहाँ से ज्ञान सीखता है, ध्यान रखना चाहिए कि ज्ञान उचित व शुद्ध रूप में प्राप्त करे विशेषतया भाषा के क्षेत्र में। भाषा ही ज्ञान का आधार होती है। अतः बालक शिक्षक के अलावा पर्यावरण में बालक के सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य होता है कि वे जो भी सीखें उचित सीखें।

1. बालक के द्वारा किए गए कार्य का मूल्यांकन।
2. मूल्यांकन में पाई जाने वाली त्रुटियों के कारण को खोजना,
3. छात्र को उन गलतियों को बताना।
4. छात्रों को पुनः गलतियाँ सुधारने का मौका देना।
5. सामूहिक त्रुटि का संशोधन सामूहिक रूप में कराया जाता है।
6. व्यक्तिगत त्रुटियों हेतु शिक्षक को अलग से प्रयास करना होगा।
7. मूल्यांकन निरन्तर किया जाए ताकि यह बात हो सके कि कहाँ तक सुधार हुआ है।
8. छात्रों की त्रुटियों पर उसको गलत कहने की अपेक्षा अभ्यास कराया जाए।
9. मौखिक अभ्यास कराया जाना चाहिए।

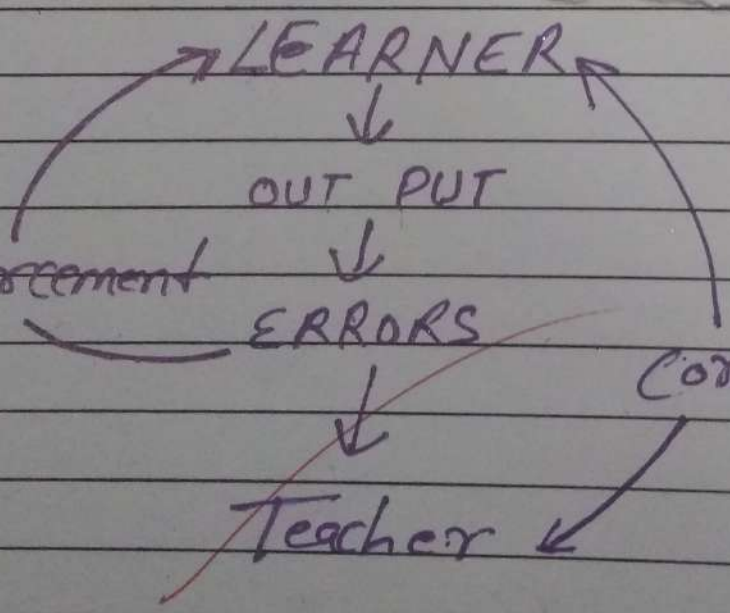

(Edinting the written text in the term discoverd, synthx, morphology and writing conventions)

संपादन हर वाक्य को ध्यान से देखने की प्रक्रिया है। प्रत्येक वाक्य को अच्छी प्रकार से देखने के पश्चात यकीन किया जाता है। कि वाक्य अच्छी तरह बनाया गया है। और यह वाक्य जिस उद्देश्य हेतु बनाया गया है उसको पूर्ण करता है। संपादन क्रिया में व्याकरणिक संशोधन प्रक्रिया द्वारा प्रयास किया जाता है। संपादन प्रक्रिया में निम्न पहुलओ पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है :-

1. व्याकरण
2. मात्राएँ
3. वर्तनी
4. विराम चिन्ह

प्रवचन /बार्तालाप के लेख मे संपादन की प्रक्रिया :-

एक प्रवचन समुदाय इन व्यक्तियो का समूह है जो आपसी विश्वास और मतो को आपस में बाटते है।

वाक्य विन्यास (Syntax) :- वाक्य के व्याकरणिक नियमो के अनुसार लिखना ही वाक्य-विन्यास कहलाता है। वाक्य नियमानुसार लिखा जाना चाहिए।

आकृति विज्ञान (morphology) :- आकृति विज्ञान के अन्तर्गत व्यवस्थित वर्णन, शब्दो का अध्ययन, अलगाव और भेदभाव के सिद्धान्तो

भाषा में उनके कार्य शब्द व्युत्पत्ति, नए शब्दों के गठन को भाषा को सुविधाजनक प्रयोग करने हेतु अध्ययन किया जाता है।

लेखन परम्परा / Writing convention

लेखन परम्परा वर्तनी, विराम चिह्न पूंजीकरण और व्याकरण की सहायता प्रदान करते हैं। इन सम्मेलनों में लेखक अधिगम से संबंधित मूल्य स्पष्ट हो जाते हैं।

1. शिक्षण पाठ्यक्रम से संबंधित लेखन :-
- प्राथमिक अनुच्छेद
- प्राथमिक वाक्य संरचना।
- मध्य विद्यालय बुनियादी यांत्रिकी।
- मध्य विद्यालय लेखन संवर्धन।
- मध्य विद्यालय अनुच्छेद लेखन।
- हाई स्कूल अनुच्छेद लेखन।

2. लेखन हेतु मुक्त संसाधन :-
- रचनात्मक लेखन
- रेखाचित्रीय आयोजन।
- लेखन प्रक्रिया।
- परम्परागत आयोजन।
- संपादन प्रक्रिया :-

3. लेखन को ध्यान से पढ़ना।
- लेख को जोर से पढ़ें,
- लेख को किसी निपुण व्यक्ति को पढ़ने के लिए दें।

- संपादक के आधार पर संशोधन करें।
- अंतिम परिवर्तन हेतु संपादक पर भेजें।
- त्रुटियों का संशोधन करें व प्रारूप तैयार करें।
- संतुष्ट होने पर भी अंतिम समीक्षा करें।

रचना (लेख)

↓

रचना को उच्चारण के साथ पढ़ना

संशोधन

↓

पुनः संशोधन हेतु भेजना

प्रकाशन

↓

पाठ का लेखन और प्रतिबिम्ब

(Writing and Reflecting on Text)

लेखन और प्रतिबिम्बन से पूर्व लेखन पर चिन्तन करना लेखक अंतर्दृष्टि देता है। प्रतिबिम्ब एक मानसिक प्रक्रिया है। यह चिन्तन या वैचारिक प्रक्रिया है। तब निम्न कारकों पर विचार करना

चाहिए :-

1. हम क्यों लिख रहे हैं ?
2. चाहे इसे दूसरो ने पढ़ा होगा?
3. हम अपने लेखन के विषय में क्या सोचते हैं?
4. हमारे लेखन के समय आने वाले भाव क्या हैं?

चिन्तनशील लेख की अवधारणा को समझना

चिन्तनशील लेख की अवधारणा को समझने के लिए सोच और सीखने के मध्य चल रहे आइने की तरह तीन महत्वपूर्ण बिन्दु हैं :-

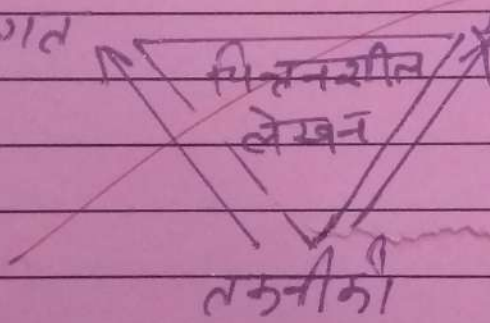

1. हम क्या चिन्तन करने जा रहे हैं और हम इस विषय पर क्यो सोच रहे हैं।
2. हम लिखे जाने वाले विषय पर कैसा सोचते हैं और प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
3. इस लेख में क्या अच्छा और बुरा है।
4. वास्तव में क्या हो रहा था?
5. लिखे जाने वाले विषय पर अलग ढंग से लिखे जाने पर हमने क्या सोचा?

पाठ का पढ़ना, चिन्तन और आलोचनात्मक चिन्तन: उनकी संरचना, अधिगम भावात्मक तत्व, शाब्दिक ज्ञान और शैक्षिक दर्शन

(Recognize the benefits of reflecting on developing teaching philosophy)

चिन्तनशील पठन (Reflective Reading) :-

चिन्तनशील पठन पढ़ने की एक पद्धति है जिसका प्रयोग प्राथमिक स्कूलो मे कक्षा 1-7 तक किया जाता है। इसमे

1. सभी के पढ़ने के लिए साक्षरता, मानक पढ़ना और प्रेरणा मे सुधार होता है।
2. शिक्षण अधिगम क्रिया मे सक्रिय रोचक रूप से पढ़ना।

Distinguish feacters of Reflecting Writing

उद्देश्यपूर्ण
↑
व्यक्तिगत ← (चिन्तनशील के रूप) → तराशा हुआ लेख
↓
बोधगम्य

चिन्तनशील सोच :- चिन्तनशील सोच को महत्वपूर्ण विश्लेषण भी कहा जाता है। इसके तार्किक

ढंग से आलोचना करना भी शामिल है।
शिक्षण के विकास मे पढ़ने, चिन्तन और आलोचनात्मक चिन्तनशील सोच के लाभ, शब्द ज्ञान और विषय ज्ञान।

1. ध्यान केन्द्रण का विकास।
2. शब्द ज्ञान का विकास।
3. स्व मूल्यांकन का विकास।
4. संशोधन की प्रक्रिया का विकास।
5. नई सोच का विकास।
6. चिन्तन शक्ति का विकास।
7. विचारो की अभिव्यक्ति एवं परीवर्तक सोच का विकास।

(Includs knowledge of types of texts: their structure, langauge, feauters, word knowledge and content knowledge, required through learning and personal experience)

पाठ के प्रमुख प्रकार

1. कथात्मक
2. वर्णात्मक
3. निर्देशित
4. अर्थ प्रकाशक
5. तर्क पूर्ण

पाठ पहचान

1. पाठ के प्रकार की पहचान का प्रयास।
2. पाठ किस प्रकार के पाठक के लिए लिखा है।
3. पाठ लिखने का उद्देश्य।
4. पाठ की संरचना का प्रकार।
5. पाठ के प्रति हमारी राय।
6. विशेष प्रकार के पाठों को पढ़ने का उद्देश्य।
7. पाठ ने हमें कैसे प्रभावित किया।

पाठ का ज्ञान :-

1. शब्द रहित पुस्तकों द्वारा ज्ञान।
2. एक या दो शब्दों वाली पुस्तक द्वारा शब्द पहचान।
3. संगीत वाद्यों वाली पुस्तक।
4. मानवीय पाठ प्रकार वाली पुस्तक।
5. पाठ की शैली की पहचान।

Sessional Work

(Any Two of the following)

Read a book, a journal article or a chapter and write personal responcess and summarize

University Roll No. ....

ग्लोबल नीड्स एण्ड इण्डियन एजुकेशन
(Global Needs and Indian Education)

Dr. Rajni Kulshrestha
Asstt. Professor
J.R. Memorial College of Education, Rewari

शिक्षा किसी भी राष्ट्र एवं समाज मे सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति का मापदण्ड होती है। मानव के आवश्यक अधिकारो में उचित भोजन, रहने को छत और वैचारिक स्वतंत्रता हेतु शिक्षा आदि आते है। विश्व मे भूमण्डलीकरण ने सभी देशों की अर्थव्यवस्था को तो तोड ही दिया है साथ ही शिक्षा को भी वैश्विक आवश्यकताओ के अनुरूप विकसित करने की आवश्यकता को उत्पन्न किया गया है। आज वैश्विक आवश्यकता ने कारण, अर्थव्यवस्था राजनीति, तकनीकी, संस्कृति, शिक्षा, सेवा, विचार, पद्धति अथवा सिद्धान्त सभी क्षेत्र से प्रभावित हुए हैं। राष्ट्र की प्रगति में उसके बहुमुखी विकास हेतु देश मे पर्याप्त मात्रा मे मानव संसाधन की पूर्ति की जानी चाहिए।

वैश्वीकरण की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए शिक्षा को वैश्वीकरण के दृष्टिकोण से समझना होगा, क्योंकि वैश्वीकरण समस्त बालकों को कुपोषण से बचाने और निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की ओर प्रयासरत है। स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि " जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामन्जस्य कर सकें वही वास्तव में शिक्षा कहलाने के योग्य है।"

तकनीकी विकास और शिक्षा की गुणवत्ता ग्लोबल आवश्यकता का प्रमुख लक्ष्य है। जिसकी शर्त के लिए भारतीय शिक्षा के मार्ग में अनेक बाधाएँ है। एक समय था जब भारतीय शिक्षा पूरे विश्व में बोलबाला था। तक्षशिला और नालन्दा विश्व प्रसिद्ध शिक्षण-संस्थान के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। परन्तु वर्तमान काल में भारतीय शिक्षा गुणवत्ता तो दूर अपने प्रमुख लक्ष्य को भी पूरा नहीं कर सकी है।

ग्लोबल आवश्यकताऐं :-

शिक्षकों की पूर्ति, विद्यार्थी शिक्षक अनुपात, शैक्षिक गुणवत्ता, रोजगारोन्मुखी शिक्षा, पाठ्यक्रम, शिक्षा में नवाचार आदि

कसौटियाँ है। जिनका सामना शिक्षा को करना है।

विश्व भांति भी वैश्वीक आवश्यकता है। परिना (यूनेस्को) के महानिदेशक के रूप में कहते है कि "आप शिक्षा निधि है, आप सभी सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यो की दिशा में प्रगति हासिल कर रहे है।"

एक और महत्वपूर्ण मुद्दा वैश्विक उद्देश्यो के मार्ग में बाधा है वह है शिक्षा को रोजगारो-न्मुखी करना। भारतीय शिक्षा अपने इस लक्ष्य को पूरा करने में असमर्थ रही है। जिसका परिणाम युवा पीढ़ी का बेरोजगारी व देश से पलायन के रूप में दिखाई देता है। अनेक चुनौतियो के रहते प्रस्तुत प्रपत्र भारतीय शिक्षा को ग्लोबल आवश्यकताओं के सदंर्भ मे व्यवधानो एवं प्रयासो के स्पष्टीकरण पर प्रयास से संबंधित है।